वर्ष-2009

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: हायर सेकेण्डरी परीक्षा

केन्द्र क्रमांक की सील: केन्द्र क्रमांक 162008

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 0 0 1 परीक्षा का विषय हिन्दी
2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12-03-2009
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें — कोड U-2001 — सेट C

माध्यमिक शिक्षा मण्डल ... पुस्तिका का ... क्रमांक K 138960...

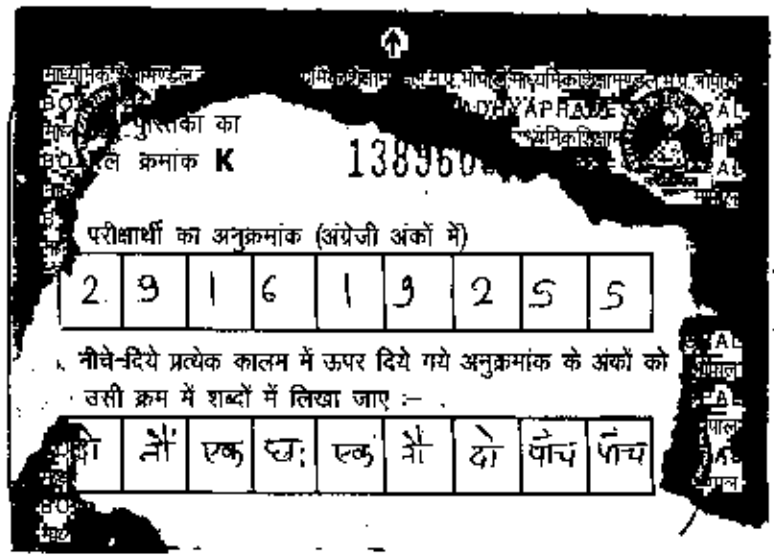

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	1	6	1	9	2	5	5

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

दो	नौ	एक	छः	एक	नौ	दो	पांच	पांच

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में X अंकों में X

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न–पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) [signature]

नाम पद

पता / संस्था

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

B S E M P

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगें।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्ति... चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन कि... पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक सम... एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक) [signature] हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 922064 दिनांक........ दिनांक........

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3

य

प्रश्न क्रमांक - 1

(i) राजकुमार गौतम संसार के दुखों से छुटकारा पाने के लिए तपस्या करने गये थे।

~~(ii) आरण्यक में दिये गये~~

(ii) कवि निराला ने पृथ्वी का आँचल सुनहरी धान को कहा है

(iii) भगवती चरण वर्मा के मानस गुरू गणेशशंकर विद्यार्थी थे।

(iv) जहाँगीर जस चन्द्रिका के रचयिता केशवदास हैं।

) आलोचना के क्षेत्र में वरदानस्वरूप आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का आगमन हुआ।

× ×

प्रश्न क्रमांक - 2

(i) का सही है - (ग) 47

(ii) का सही है (ख) सावन गीत।

(iii) छायावादी काव्य की विशेषताएँ -

(क) सामाजिक यथार्थ का चित्रण।

B S E

कुल अंक

(iv) का सही है (ख) परिवार से मिलने की उत्सुकता पर।

(v) का सही है (घ) आठवें।

प्रश्न क्रमांक – 3

(i) भाषा का सम्बन्ध मनुष्य की ध्वनियों से होता है। सत्य

(ii) 'नदी के द्वीप' रचना के कवि अज्ञेय हैं। सत्य

(iii) कवि सोम ठाकुर ने वर्तमान समाज की विसंगतियों पर तीखा प्रहार किया है। सत्य

(iv) जहाँ समस्त प्रसिद्ध कारण के उपस्थित रहने पर भी कार्य सम्पन्न न हो, वहाँ विभावना अलंकार होता है। असत्य

(v) अध्यक्ष की एक विशेषता होती है कि वह समय से कार्यस्थल पर पहुँचता है। असत्य

BSEMP

5 | 13 + 5 = 18
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 5 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्रमांक - 4

कॉलम (अ) | कॉलम (ब)

(i) हिन्दी गद्य साहित्य की धरोहर - (अ) निबंध

(ii) बाल्हा मैं बैरागिन हूँगी - (ङ) मीराबाई

(iii) सुपर कम्प्यूटर - (घ) नैनो टैक्नोलॉजी

(iv) आत्मकथा के क्षेत्र से निकली विधा - (क) संस्मरण

(v) मध्यमवर्गीय परिवार की समस्या - (ख) नये मेहमान

× ×

प्रश्न क्रमांक - 5

(i) सुजान ने।

(ii)

(iii) सरल या साधारण वाक्य

(iv) सज्जनों की।

B S E N P

पृष्ठ के अंकों का योग

6

V) रामदरश मिश्र

प्रश्न क्रमांक— 6

उत्तर :— बलिदानी रंग से कवि का तात्पर्य है कि हम भारत के निवासी हैं। हमारे देश में एकता है। लोकसंस्कृति हमारी धरोहर है। हमारे देश में में गंगा रूपी एकता की जो धारा बह रही है उसमें रूकावट डालने वाले देशद्रोही को हमारे भारत के वीर अपना बलिदान करके नष्ट कर देते हैं। भारत की वीर एकता में डालने वाली बाधाओं को हमेशा अपना बलिदान करके दुश्मनों से लड़ने की क्षमता रखते हैं। यहाँ कवि का बलिदानी रंग से तात्पर्य वीरों के रक्त से है जो देश की रक्षा के लिए भारतीय वीर बहाते हैं।

"उस मिट्टी में सोना अपना डाल दो।
x x x x x x x x x
कुंकुम ! भारत की जय बोल दो।।"

प्रश्न क्रमांक—7

महत्ता कविता में भारतवर्ष की विशेषताएँ :— महत्ता कविता में भारतवर्ष की नि० लि० विशेषताओं का उल्लेख किया है—

B S F I P

(1) भारत ने ही विश्व को धर्म तथा अध्यात्म की शिक्षा दी।

(2) भारत ने ही पिछड़े तथा उपेक्षित देशों को आगे लाने का प्रयास किया।

(3) भारत ने अपने ही नहीं बल्कि दूसरे देशों के हित की भी चिन्ता की है।

(4) आदिकाल से ही भारतीय ज्ञान-पिपासु रहे हैं।

(5) भारत का गौरव स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है।

× ×

प्रश्न क्रमांक – 8 अथवा

आधुनिक हिन्दी कविता के विकास क्रम को विद्वानों ने निम्न प्रकार वर्गीकृत किया —

(1) भारतेन्दु युग — 1850 - 1900 तक
(2) द्विवेदी युग 1900 - 1920 तक
(3) छायावादी युग 1920 - 1936
(4) प्रगतिवादी युग 1936 - ~~1950~~ 1943 तक
(5) प्रयोगवादी युग ~~1936~~ 1943 - ~~1950~~ 1950 तक

ISEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(4) नई कविता 1950 से अब तक।

हिन्दी साहित्य का प्रवेश द्वार भारतेन्दु युग को माना गया है।

प्रश्न क्रमांक – 9 'अथवा'

जीवनी और आत्मकथा में अंतर :— जीवनी और आत्मकथा में निम्न लिखित अंतर हैं —

	जीवनी	आत्मकथा
1.	जीवनी किसी अन्य लेखक द्वारा किसी अन्य लेखक की लिखी जाती है।	1. आत्मकथा लेखक के द्वारा स्वयं लिखी जाती है।
2.	जीवनी में किसी अन्य के गुण-दोषों की विवेचना होती है।	2. आत्मकथा में लेखक के स्वयं के गुण-दोषों की विवेचना होती है।
3.	जीवनी में लेखक तटस्थ रहता है और प्रमाणिकता में की आवश्यकता होती है।	3. आत्मकथा में लेखक तटस्थ नहीं रहता तथा प्रमाणिकता की आवश्यकता नहीं होती है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

कुल अंक

जीवनी का लेखक	रचना	आत्मकथा के लेखक	रचना
अमृतराय	कलम का सिपाही	बाबू गुलाब राय	- मेरी असफलता

प्रश्न क्रमांक - 10

उत्तर :- रामनारायण उपाध्याय जी कहते हैं कि मैं साहित्य में स्नेह को बहुत मूल्य देता हूँ क्यों कि वह कहते हैं कि स्नेह अर्जन केवल वही व्यक्ति कर सकता जो साहित्य लिखता हो। हर व्यक्ति स्नेह अर्जन नहीं कर सकता। वे जब भी किसी नये शहर में जाते हैं तो सबसे पहले वहाँ के साहित्यकारों से मिलते हैं यदि साहित्यकार यदि छोटा आदमी है तो वह उनके घर जाकर उनसे मिलते हैं। और यदि जो साहित्यिक दूर होते हैं अर्थात् जिनसे मिलने में वे असमर्थ होते हैं उनसे पत्र द्वारा अपना प्रणाम पहुँचाने में सुख का अनुभव करते हैं। वह कहते हैं कि पैसा तो कोई भी व्यक्ति कमा सकता है लेकिन स्नेह अर्जन केवल एक साहित्यकार ही कर सकता है। वह कहते हैं कि जो साहित्यिक होकर अपने मित्रों से मिलने की इच्छा न रखता हो वह कैसा साहित्यिक है। अतः रामनारायण उपाध्याय जी कहते हैं कि - 'मैं साहित्य में स्नेह को बहुत मूल्य देता हूँ'।

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

प्रश्न क्रमांक - 11

भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ लता मंगेशकर का गायन उच्चकोटी का है उन्होंने ही चित्रपट संगीत का बढ़ावा दिया तथा शास्त्रीय संगीत की ओर लोगों की रूचि बढ़ाई है

लता जी के गायन की विशेषताएँ :— लता जी के गायन की नि० लि० विशेषताएँ हैं जो निम्न हैं —

(1) लता जी के स्वरों में कोमलता है।

(2) लता जी के स्वरों में कोमलता के साथ-साथ निर्मलता है।

(3) स्वरों का नादमय उच्चार है लता जी दो स्वरों को आपस में इस प्रकार अलाप द्वारा जोड़ देती है कि वे एक से प्रतीत होते हैं।

(4) गीत में दो स्वरों को अलाप द्वारा इस प्रकार जोड़ना बहुत कठिन कार्य है लेकिन उनके लिए यह एक सहज एवं सरलतापूर्वक होने वाला कार्य है।

(5) लता जी का गायन ऊँची पट्टी का गायन है।

BSEMP

BSEMP

प्रश्न क्रमांक – 12

उत्तर :– सहृदय के हृदय में स्थित शोक नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव, संचारी भाव से संयोग होता है तो वह करुण रस का रूप ग्रहण कर लेता है।

अथवा

किसी प्रिय वस्तु या इष्ट वस्तु के नष्ट हो जाने पर जो हृदय में भाव जाग्रत होते हैं उसे करुण रस कहते हैं।

उदाहरण :– प्रिय सुत वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है।
इस जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है।।
लख मुख जिसका आज लौं जी सकी हूँ
वह हृदय दुलारा

करुण – शोक
आश्रय – यशोदा
आलम्बन – श्रीकृष्ण
उद्दीपन – कृष्ण का घुटनों के बल चलना
अनुभाव – कृष्ण को दूध पिलाना, नन्द को बुलाना
संचारी भाव – हर्ष, उत्कण्ठा

योग प

प्रश्न क्रमांक - 13

(अ)(क) उल्टी गंगा बहाना :- विपरीत कार्य करना

प्रयोग :- राम का पेपर गणित का है लेकिन वह हिन्दी की तैयारी कर रहा है यह तो वही बात हो गई कि उल्टी गंगा बहाना।

(ख) पगड़ी उछालना :- लांछन लगाना

प्रयोग :- राम ने चोरी करके अपने पिताजी की पगड़ी उछाल दी।

(ब)

राष्ट्रभाषा की परिभाषा :- राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्य, विभिन्न राष्ट्रों द्वारा अपनाई जाने वाली भाषा को ही राष्ट्रभाषा कहते हैं। भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है।

राष्ट्रभाषा की दो विशेषताएँ :- राष्ट्रभाषा की विशेषताएँ निम्न लिखित हैं -

(1) यह जनसामान्य की भाषा होती है जो बहुसंख्यक लोगों द्वारा बोली जाती है।

B S E M P

(2) राष्ट्रभाषा का क्षेत्र व्यापक एवं विस्तृत होता है।

: × × :

प्रश्न क्रमांक – 14

'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल'

दो रचनाएँ:— (1) निबंध संग्रह – चिंतामणी भाग 1 व 2
(2) इतिहास – हिन्दी साहित्य का इतिहास

भाषा:— शुक्ल जी की भाषा परिष्कृत एवं प्रौढ़ रचना है संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है भाषा सरस एवं सरल है। भाषा में कहावतों व मुहावरों के प्रयोग से भषा सरल, सुबोध हो गई है। कहीं-कहीं तो भाषा लावण्यमयी हो गई है कहीं-कहीं शक्तिमय भी हो गई है –

जैसे – ~~अचार क्रोध का~~
"क्रोध अचार का बैर या मुरब्बा है"

शैली:— शुक्ल जी अपनी शैली के स्वयं निर्माता थे उनकी शैली व्यास रूप में प्रारम्भ होकर समास रूप में समाप्त हो जाती है।

(1) समीक्षात्मक शैली:— यह शैली में समीक्षात्मक एवं समालोचनात्मक निबंध लिखे गये।

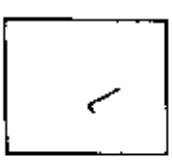

पृष्ठ के अंकों का योग

(2) गवेशणात्मक शैली :- इस शैली में शब्द विन्यास जटिल व वाक्य विन्यास क्लिष्ठ था।

(3) हास्य-व्यंग्य एवं विनोद प्रधान शैली :- इस शैली का प्रयोग निबन्धों में किया गया निबन्ध में हास्य व्यंग्य का अभाव था लेकिन इस शैली के प्रयोग से निबंधों में रोचकता आ गई है।

B
S
E
M
P

प्रश्न क्रमांक - 15

'सूरदास'

दो रचनाएँ :- सूरसागर, साहित्य लहरी

भावपक्ष :-

भक्तिभावना :- सूरदास जी सगुण भक्ति धारा के कृष्णमार्गी शाखा के कवि थे इनकी श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति भावना थी।

"मेरो मन अनत कहाँ सुख पावे जैसे उडे जहाज को पंछी।
× × × × × × × × ×
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरि कौन दुहावे॥"

रस सिद्ध कवि :- सूरदास जी रस सिद्ध कवि हैं डॉ. श्यामसुन्दर दास कहते हैं कि वात्सल्य रस का

/

पृष्ठ के अंकों का योग

अद्भुत वर्णन मिलता है तो वो केवल सूरदास की रचनाओं में है।

वात्सल्य रस का वर्णन :- वात्सल्य वर्णन को हिन्दी की अमूल्य निधि कहा जाता है सूरदास जी ने वात्सल्य वर्णन का अनोखा रूप चित्रित किया है।

कलापक्ष :-

अलंकार योजना :- सूरदास जी के पदों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा अलंकारों की बहुलता है।

छंद योजना :- सूरदास जी ने मुक्तक छंद का प्रयोग किया है।

रस :- सूरदास जी ने वात्सल्य रस का अद्भुत वर्णन अपनी रचनाओं में किया है जो कि सूरसागर में चित्रित हुआ है।

साहित्य में स्थान :- सूरदास जी वात्सल्य रस के सम्राट हैं सूरदास जी आकाश में चमकने वाले सूर्य के समान हैं। अष्टछाप के कवियों में उनका प्रमुख स्थान है

"सूर, सूर्य, तुलसी, शशी, उड़गन केशवदास।
अब के कवि खद्योतसम जहँ तहँ करें प्रकाश।।"

BSEMP

प्रश्न क्रमांक -18

दुःख या आपत्ति _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ काल तक रहती है।

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक स्वाती के 'भय' पाठ से अवतरित है इसके लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल है

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश में शुक्ल जी ने आशंका को परिभाषित करते हुए मनुष्य के हृदय में उत्पन्न भय को बतलाया है।

व्याख्या :- शुक्ल जी कहते हैं कि दुःख या विपत्ति के पूर्ण निश्चय न होने पर जो आवेग शून्यमय होता है उसे आशंका कहते हैं। भय को हम साध्य अथवा असाध्य बनाकर दूर कर सकते हैं परन्तु आशंका को हम दूर नहीं कर सकते हैं। भय को दूर किया जा सकता है लेकिन आशंका बनी रहती है। आशंका से मनुष्य भय की अपेक्षा ज्यादा भयभीत रहता है क्योंकि भय कुछ समय को होता है लेकिन आशंका हमेशा बनी रहती है अर्थात यह अधिक समय तक रहती है।

विशेष :- संस्कृत के संस्कृत निष्ठ भाषा का प्रयोग हुआ है।

BSEMP

BSEMP

भाषा सरल एवं सुबोध है।

× × ×

प्रश्न क्रमांक - 17

भज मन चरण ---------- जनम फिर आसी।

संदर्भ :- भक्ति काल की अग्रणी मीराबाई, प्रेम की तल्लीनता वाली, प्रेम की आकुलता वाली, सास्वत भाव रखने वाली मीरा के पद से अवतरित हैं इसकी कवयित्री मीराबाई हैं

प्रसंग :- प्रस्तुत पद में मीराबाई मनुष्य को भगवान के भजन करने के लिए कहा है।

व्याख्या :- मीराबाई कहती हैं कि हमें हमारा मन भगवान के कमल रूपी चरणों में लगाना चाहिए। जो भी दृश्य और गगन मण्डल के बीच दिखाई दे रहा है वह सब झूठ है अर्थात् व्यर्थ है। जो एक बाजार की तरह है जिस प्रकार बाजार समाप्त हो जाता है उसी प्रकार हमारा जीवन है। क्या होता तीरथ करने से यदि हमने ईश्वर को प्राप्त करने का मार्ग नहीं जान पाया। क्या होता है पीले वस्त्र धारण करने से क्या फायदा। हमें इस शरीर का गर्व नहीं करना

पृष्ठ के अंकों का योग

चाहिए क्योंकि यह शरीर एक दिन मिट्टी में मिल जाएगा इस संसार में रहकर यदि ईश्वर प्राप्ति का मार्ग नहीं जान पाया तो सब कुछ व्यर्थ है हमें पुनः इस जीवन मरण के चक्र में फँसना पड़ेगा।

विशेष काव्य सौन्दर्य :— (1) राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा का प्रयोग

(2) गुण – माधुर्य

(3) पद – गेय

(4) रस – भक्ति रस

(5) कृष्ण के प्रति भक्तिभावना।

— x — x —

प्रश्न क्रमांक – 18

(क) चरित्र की महत्ता।

(ख) इस गद्यांश में बताया है कि चरित्र एक ऐसी शक्ति है जो मनुष्य को समाज में ऊँचा उठा देती है। चरित्र हीन व्यक्ति का जीवन निरर्थक है चरित्रहीन व्यक्ति मरे हुए के समान है अतः मनुष्य को अपना चरित्र अच्छा बनाना चाहिए।

BSEMP

(ग) चरित्र रूपी शक्ति, विद्या, बुद्धि और सम्पत्ति की शक्ति से महान होती है

× ×

प्रश्न क्रमांक - 19

सेवा में,

श्रीमान् जिलाधीश महोदय,

जिला - शिवपुरी

म० प्र०।

विषय:- परीक्षा काल में ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर रोक लगाने के सन्दर्भ में।

महोदय,

सविनय नम्र निवेदन है कि माध्यमिक शिक्षा मण्डल भोपाल की परीक्षा समीप है हम सभी छात्र-छात्राएँ अपने अध्ययन में व्यस्त हैं लेकिन धार्मिक स्थलों, दुकानों पर ध्वनि विस्तारक यंत्र बड़ी तीव्र आवाज में बजाये जा रहे हैं जो कि पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न कर रहे हैं। हम अपने अध्ययन में एकाग्रता के साथ नहीं कर पा रहे हैं

अतः श्रीमान जी से निवेदन है कि परीक्षा अवधि तक ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर रोक लगाने का कष्ट करें।

- आपका सहयोग ही हमारी सफलता का कारण है-

धन्यवाद -

- निवेदक -

दिनांक - 12/03/2009

समस्त छात्र संघ

B S E M P

प्रश्न क्रमांक - 20

(iii) परहित सरस धर्म नहीं भाई

रूप रेखा :- ① प्रस्तावना ② परोपकार का अर्थ ③ परोपकार के विभिन्न कार्य ④ परोपकारी महामानव ⑤ परोपकार और प्रकृति ⑥ पशु एवं मनुष्य में भेद ⑦ उपसंहार।

"काँटा चुभा किसी के, तड़पे हम मीत।
सारे जहाँ का दर्द, हमारे जिगर में॥"

① प्रस्तावना :- परोपकारी महामानव शांति पूर्वक अपना जीवन बिताता है। इसमें ही उनका जीवन सार्थक है। प्रत्येक व्यक्ति परोपकार करना चाहता है। परोपकार करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है अतः हम सभी को को परोपकार करना चाहिए तुलसीदास ने इसके सन्दर्भ में अपने ग्रंथ रामचरित मानस में लिखा है-

"परहित सरस धर्म नहीं भाई,
परपीड़ा सम नहीं अधिमाई।"

इसका अर्थ है कि हमें हमेशा दूसरों को सुख प्रदान करना चाहिए यही सबसे बड़ा धर्म है दुख किसी नहीं पहुँचाना चाहिए।

② परोपकार का अर्थ :- परोपकार दो शब्दों से मिलकर बनता है पर + उपकार

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

पर का अर्थ होता है दूसरा और उपकार का अर्थ होता है सहायता अर्थात् दूसरों की सहायता ही परोपकार कहलाता है।

(3) परोपकार के विभिन्न कार्य :— परोपकार करने के लिए हमे विभिन्न कार्य करने चाहिए जैसे कि - निर्धन रोगियों के लिए सरकारी अस्पताल अशिक्षित व्यक्तियों के लिए जिनके पास पैसा नही है कि वे साक्षर हो सके उनके लिए हमें सरकारी स्कूल, कालेज खुलवाना चाहिए। बूढ़े लोगों के लिए आश्रम बनाना चाहिए।

(4) परोपकारी महामानव :— संसार में अनेक लोगों ने परोपकार किये हैं जैसे - गौतम बुद्ध ने परोपकार अर्थात् जगत कल्याण के लिए अपना घर त्याग कर दिया था हमें उन्हीं परोपकारी महामानवों से शिक्षा लेकर परोपकार करना चाहिए।

"निज हेतु बरसता नहीं व्योम से पानी,
हम हों समष्टि के लिए व्यष्टि बलिदानी।"

(5) प्रकृति एवं परोपकार :— प्रकृति भी परोपकार करती है वृक्ष जो हमें लगातार मीठे फल देते हैं, नदियाँ हमारे लिए निरन्तर प्रवाहित रहती हैं, सूरज हमारे लिए निरन्तर तपता रहता है, चन्द्रमा

पृष्ठ के अंकों का योग

शीतलता प्रदान करता है इस तरह प्रकृति भी परोपकार करती है। हमें प्रकृति से शिक्षा लेकर निरन्तर परोपकार करते रहना चाहिए।

"तरूवर फल नहीं खात हैं, सरूवर पियहिं न पान।
कह रहीम परकाज हित, सम्पति संचपी सुजान॥"

(6) पशु एवं मानव में :- मनुष्य ही नहीं बल्कि पशु भी मनुष्य के समान जीवन यापन करते हैं पशु भी अपने बच्चों को जन्म देते हैं और उनके भरण पोषण के लिए भोजन एकत्रित करते हैं हमारा जीवन भी पशु के समान ही कहा जाएगा क्यों कि जिस प्रकार पशु अपने बच्चों को भरण पोषण करता है उसी प्रकार मनुष्य भी लेकिन परोपकारी व्यक्ति हमेशा पशु की तरह अपना जीवन यापन नहीं करता बल्कि परोपकार करके अपने जीवन को सार्थक बनाता है।

(7) परोपकार के लिए आदर्श रूप :- परोपकार के लिए कई कार्य करने पड़ते हैं स्वार्थी व्यक्ति कभी परोपकार नहीं कर सकता हमेशा निस्वार्थ व्यक्ति ही परोपकार कर पाता है जैसे दधीची ने अपने अस्थियों का दान किया था।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

(8) उपसंहार :- प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह प्रकृति में निस्वार्थ भाव से जीवन यापन करते परोपकार करना चाहिए। परोपकार के बिना जीवन अर्थक है परोपकारी व्यक्ति ही सफलता पाता है हम सभी का पुनीत कर्तव्य यह है कि हमें निस्वार्थ भाव अर्थात् छल कपट रहित मन से परोपकार करना चाहिए।

"आदमी लाख सँवरने पर भी गिरता है।
झुककर जो उसे उठाले वह खुदा होता है॥"

BSEMP

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग